विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

लोकसेवा में समर्पण चाहिए, आत्मसमर्पण नहीं

प्रशासनिक कुशलता, दक्षता और तीव्रता सार्वजनिक सेवा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। हालांकि नौकरशाही को पूरी दुनिया में एक बड़ा प्रशासनिक बोझ समझा जाता है, किन्तु लोकसेवा हेतु इससे महत्वपूर्ण संगठनात्मक या सांस्थानिक विकल्प आज तक नहीं खोजा जा सका है। हाँ, इस बात पर शोध अवश्य हुई है कि लोकसेवकों और लोकसेवा के दुर्गुण क्या हैं, और इसे कैसे बेहतर कैसे बनाया जा सकता है। आज की चर्चा ब्यूरोक्रेसी की कार्यशैली में पनपते कुछ दुर्गुणों और उनसे छुटकारा पाने की रणनीतियों पर केन्द्रित है।

पूरी दुनिया में लोकसेवकों के कार्य के सन्दर्भ में कुछ मुहावरों का प्रयोग प्रचलन में बढ़ा है। इन मुहावरों का प्रयोग तो अकारण नहीं है, पर इन्हें पूर्ण सत्य मान लेना भरी भूल होगी। दरअसल, पेचीदे पचड़ों से कन्नी-काटना,पॉलिटिकलीकरेक्ट रहने की लालसा में अपनेवरिष्ठों का मुँह-ताकना,कार्य संपादन में खानापूर्ति करना, टकराव और समस्यामूलक मामलों में उत्तरदायित्व से बचने मुद्दों की जलेबी बनाना, और विविध कारणों से लीपापोती करना आज विश्व में लोकसेवकों की कार्यशैली की सबसे बड़ी खामियों के रूप में देखा जाता है।

लोक-प्रशासन में तथ्य, तर्क और निर्णय का घालमेल बड़े पचड़े खड़ा करा देता है। एक लोकसेवक की भूमिका में, अगर हमारे पास सभी आँकड़े और तथ्य हैं, तो हम अपनी तर्कशक्ति के उपयोग से नये ज्ञान तक पहुँच सकते हैं और उसका उपयोग लोक हितकारी और सटीक निर्णय लेने के लिये कर सकते हैं। पर रोज़मर्रा की सरकारी और निज़ी जिंदगी में हम बड़े घटिया तार्किक कौशल दिखाते हैं। असल पचड़ा यह है कि हम या तो सुस्थापित तथ्यों की अनदेखी कर जाते हैं या जानबूझकर उपेक्षा करते हैं, क्योंकि हम प्राय: अपने पूर्वाठाहों और मन की सुनते हैं। या फिर हम उसकी सुनते हैं जिसका सुनना हमारे लिये तात्कालिक रूप से हितकर दिखता है। इस स्थिति को मानव-चिंतन के एक मॉडल, जिसमें दो प्रणालियाँ एक-साथ काम करती हैं, के द्वारा समझा जा सकता है। एक पद्धित मनमौजी स्वाभाविक सहजता के सहारे तेज़ी से काम करती है, जबकि दूसरी पद्धित धीमी व बोझिल, किन्तु जान-समझ कर, जागरूक रहते हुये, हिसाब-किताब लगाने वाली सोच के कारण अधिक विश्वसनीय, सटीक और कारगर होती है। एक तीसरा रास्ता, जैसा कि पूर्व में कहा गया है,कन्नी काटने, मुँह ताकने या लीपापोती करने वाला भी है जो समकालीन विश्व में लोकसेवकों के बीच सबसे बड़ी बीमारी बनकर उभरा है।

किसी भी शासन में रोजमर्रा के प्रशासन की कल्पना और क्रियान्वयन लोकसेवकों के बिना संभव नहीं होता। प्रमाण-आधारित नीति-निर्धारण में उनके ज्ञान और कौशल की भूमिका तो है ही, इन नीतियों और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व भी लोकसेवकों का होता है। लोकसेवक प्रमाण-आधारित निर्णय और उनके कियान्वयन में निष्पक्षता रखकर कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार करते हैं। अत: किसी भय या लालच के कारण तर्क, प्रमाण, सत्य या निष्पक्षता से समझौता करना हानिकारक रहता है। लोकसेवकों द्वारा निष्पक्षता से समझौता या निर्णयों व नीति-निर्धारण में तर्कों और प्रमाणों की समग्रता को नज़रअंदाज करते ही न केवल जनहितकारी कार्यक्रम क्रियान्वयन बाधित होता है, अपितु अनेकानेक सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय अपराधों की अनवरत श्रंखला प्रारम्भ हो जाती है।

ज्ञान, शक्ति, तर्क, व प्रमाण-आधार, सत्यनिष्ठा आदि कालोकसेवकों की दक्षता और प्रतिभा को उभार कर सामने लाने मेंमहत्वपूर्ण योगदान है। अत:तर्क सुनने, प्रमाण देखने, सत्य बोलने, प्रमाण-आधारित निर्णय लेने और लोक-कल्याणकारी काम करने की अपनी हैसियत और हिम्मत को जीवित रखना भी आवश्यक है। वरिष्ठता के प्रति सम्मान तो ठीक है, पर श्रेष्ठता के बजाय की वरिष्ठता की पूजा को ब्यूरोक्रेसी का दुर्गुण नहीं बनने देना चाहिये।

> **किसी भी शासन में रोजमर्रा के प्रशासन की कल्पना और क्रियान्वयन लोकसेवकों के बिना संभव नहीं होता। प्रमाण-आधारित नीति-निर्धारण में उनके ज्ञान और कौशल की भूमिका तो है ही, इन नीतियों और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व भी लोकसेवकों का होता है। लोकसेवक प्रमाण-आधारित निर्णय और उनके कियान्वयन में निष्पक्षता रखकर कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार करते हैं।**

वैश्विक अर्थव्यस्था, समाज और पर्यावरण में बदलाव के कारण लोकतांत्रिक देशों में लोक-प्रशासनिक प्ररिदृश्य इतना तेजी से बदल रहा है कि लोकसेवकों को सफलतापूर्वक नवाचारी कार्य-सम्पादन हेतु बहुत अलग और विशिष्ट ज्ञान और कौशल की आवश्यकता है। इस विशिष्ट परिस्थिति के कारण अनेक जाने-अनजाने पचड़ों से उनका नियमित सामना होता है।निर्णय लेते समय ऊपर वर्णित तमाम समस्याओं से निपटने के लिये ध्यान यह रखना चाहिये कि प्रमाण-आधारित निर्णय के बिना लोकसेवकों द्वारा किये जाने वाले कार्य संपादन और उसके परिणामों कोन तो वांछित सर्वमान्यता और नही लोकप्रियता नही मिल पाती। यह आवश्यक नहीं कि सभी निर्णय या कार्य सर्वमान्य हों, परन्तु अधिसंख्य लोगों के मध्य उनकी स्वीकार्यता आवश्यक है। दीर्घकालिक विकास के लिये यह एक आवश्यक शर्त है।

भारत का उदाहरण लें तो एक विशेष बात यह है कि सांस्कृतिक, सामाजिक एवं भौगोलिक विविधताओं के बावजूद मूलत: भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका स्वतंत्र है। शासन-व्यवस्था भी तुलनात्मक रूप से उच्च कोटि की निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से निर्वाचित जन-प्रतिनिधियों के हाथ में है। जहाँ तक लोकसेवकों या सिविल सर्वेन्ट्स की कार्य प्रणाली का प्रश्न है, लोगों की उम्मीद पर खरे उतरने के लिये सबसे बड़ी और प्रभावी रणनीति यही है कि वे तमाम तरह के लोगों की बात सुनें, प्रमाणों की अनदेखी न करें, सही-ग़लत का पूर्ण आँकलन करें एवं प्रमाण आधारित निर्णय लेते हुयेजनोपयोगीकायक्रमों का ठोस क्रियान्वयन करें।

लोकसेवकों के संदर्भ में मीडिया के रिश्तों को देखें तो चकाचौंध-पत्रकारिता वाले वर्तमान परिदृश्य में मीडिया की पैनी, छिद्रान्वेषी या वक्रीदृष्टि लोकसेवकों की छवि पर प्रभाव डालती है। सत्य-असत्य की वास्तविकताओं को जाने बिना ही लोगों के मन में यह बात बैठने लगती है कि लोकसेवक प्राय: पब्लिक-आफिस का उपयोग प्राइवेट-इंटरेस्ट साधने में करते हैं। सत्य या असत्य की वास्तविकता का पता तो न्यायिक प्रक्रियाओं से ही लगाया जा सकता है, किंतु लोकसेवकों को अनावश्यक व्यक्तिगत हानि से बचने के लिये प्रमाण-आधारित निर्णय एक उपयोगी व्यवस्था है।

लोकसेवकों को प्राय: जटिल, और विविध आयामों वाली समस्याओं से प्रतिदिन सामना होता है। यह समस्यायें बहुत अधिक समय, श्रम और ज्ञान का निवेश मांगती हैं। इससे भी आगे, समय के साथ लोकतांत्रिक देशों में शिक्षा का प्रसार नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति सजग बना रहा है। यह मानवता के लिये अत्यंत शुभ लक्षण है, परन्तु जागरूक नागरिक अपने मूलभूत अधिकारों की सुरक्षा के लिये लोकसेवकों पर बहुत दबाव बनाने लगे हैं। लोकसेवकों को उनके रहन-सहन, चाल-चलन, कृत्य-कुकृत्य, राजप्रियता या राज-सुहाती वक्तव्यों से व्यथित नागरिकों द्वारा उत्तरदायी ठहराये जाने की प्रवृत्तियों और क्षमताओं में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। अत: लोकतंत्र और लोकसेवकों का हित इसी में है कि वे राज-प्रिय या सर्व-प्रिय बने रहने के बजाय, अपनी सलाह और निर्णय साक्ष्यों और प्रमाणों के कठोर विश्लेषण के आधार पर दें। मज़बूत सुशासन या गुड-गवर्नेंस दे सकने में सक्षम लोकसेवकों के लिये यह जरूरी होगा कि वह अपने पारंपरिक कर्तव्य-निर्वहनके दायित्व से ऊपर उठकर कार्य करें। उन्हें विशेषज्ञता भी हासिल करना आवश्यक है, क्योंकि औसत दर्जे के लोकसेवकों कीमांग धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। छद्म-विशेषज्ञता व्यक्ति को स्वयं के अज्ञान से अनभिज्ञ बनाकर सीखने का मार्ग अवरुद्ध करती है। अत: जीवन भर उन्हें ज्ञान और कौशल अर्जित करते रहना होगा।

लोक-प्रशासन में लोगों की रायऔर तर्क सुनना अपरिहार्य है। नागरिकों से अनावश्यक दूरी बनाते हुये नकचढ़ा या मिथ्याभिमानी होना,या अँकड़ और ऐंठ में रहना,लोकसेवकों की छवि में हानि पहुँचाता है।उन्हें व्यक्तिगत-विनम्रता और प्रशासनिक-शक्ति के अनोखे मेलजोल को साधकर चलना पड़ता है। लोगों की समस्यायें सुनते समय सार्वजनिक जीवन में,या निजी जीवन में भी,अभिव्यक्ति की मर्यादा लोकसेवकों के मानवीय दृष्टिकोण का संकेतक है। अभिव्यक्ति की आज़ादी का तात्पर्य बकवास करने या चिल्लाने का अधिकार नहीं है। प्रबंध-विज्ञान में दीर्घकालिक शोध से पता चलता है कि बदज़बानी, डांट-डपट, दुर्वचन, झिड़की, फटकार, घुड़की, या चिल्लाहट से लोगों या परिस्थितियों को नियंत्रित करने की प्रवृत्ति प्राय: उन लोकसेवकों में अधिक पायी जाती है, जो सत्य के समक्ष तर्करहित हो चुकते हैं, या तथ्यों और तर्कों से अनभिज्ञ रहते हैं सत्यनिष्ठ किन्तु परिश्रमी, दक्ष, नवाचारी और प्रतिभाशाली लोकसेवकों का दीर्घकालिक महत्व कमोबेश सदैव बना रहता है।

नवाचार में प्रयत्नशील और काम करने वालों लोकसेवकों से ही त्रुटियाँ होंगी बिना किसी भय या आशा के, सत्यनिष्ठा के साथ नियम-क़ानून का पालन और नागरिकों की सेवा न केवल सर्वमान्य सार्वभौमिक सिद्धांत है, अपितु इसी में लोकसेवकों का हित भी निहित है नीतियों और क़ानूनों को लागू करने एवं उच्चकोटि के कार्यक्रम-क्रियान्वयन में लोकसेवकों की वर्तमान क्षमता ही भविष्य में देश का आर्थिक, सामजिक या पर्यावरणीय परिदृश्य निर्धारित करेगी।

अंत में दो बातेंयाद रखनासदैव उपयोगी है। पहली बात लोकसेवकों से कहना हैकिदिन भर ऐसा काम कीजिये कि रात की नींद हराम न हो। और जब तक जियें तब तक ऐसे काम कीजिये कि मरने के बाद भी शांति भंग न हो: दिवसेनैव तत् कुर्याद्येनरात्रौसुखंवसेत्।यावज्जीवं च तत्कुर्याद्येनप्रेत्यसुखंवसेत्।। पूरे समर्पण और निष्ठा से काम कीजिये पर डर के मारे आत्मसमर्पण करके मत बैठ जाइये। दूसरी बात उन राजनेताओं से कहना है जिन्हें केवल प्रिय बोलने वाले याअपने विवेक को आत्म समर्पित करते हुये हाँ-में-हाँ मिलाने वाले लोकसेवक पसंद हैं। ऐसे राजनेताओं के लिये महाकवि तुलसीदास की यह सलाह याद रखना उपयोगी रहता है :सचिव बैदगुरतीनिजौं प्रिय बोलहिं भय आस। राज धर्म तन तीनि कर होइबेगिहीं नास।। विश्व में सर्वाधिक जीवंत लोकतंत्र उन्ही देशों में है जहाँ लोकसेवक राज-प्रिय या सर्व-प्रिय बने रहने के बजाय, अपनी सलाह या निर्णय साक्ष्यों व प्रमाणों के व्यापक और कठोर विश्लेषण के आधार पर देते हैं।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

चरित्र का बाज़ार और सफलता की अंधी दौड़ - कौन बनेगा चरित्रवान?

आज के दौर का सबसे बड़ा सच यही है कि चरित्र अब एक आउटडेटेड (पुराना) सिक्का बन चुका है, जो सफलता के आधुनिक मॉल में नहीं चलता

प्रोफेसर अशोक कुमार

जहां चरित्र की डिमांड ही नहीं है, वहाँ उसकी सप्लाई कैसे होगी यह कड़वी टिप्पणी दिल को छूने वाली भी है और आज के समाज का एक सच भी। चरित्र के "बाज़ार" का अर्थशास्त्र है-कि जहाँ डिमांड ही नहीं है, वहाँ सप्लाई कैसे होगी-वह पूरी व्यवस्था पर एक ज़ोरदार तमाचा है।

जब माता-पिता, शिक्षक, छात्र और खुद परीक्षा कराने वाली संस्थाएं शॉर्टकट और कामयाबी के पीछे अंधी हो जाएं, तो यह सवाल उठना लाज़मी है कि "आखिर चरित्रवान कौन बनेगा और क्यों बनेगा?" आज के दौर का सबसे बड़ा सच यही है कि चरित्र अब एक आउटडेटेड (पुराना) सिक्का बन चुका है, जो सफलता के आधुनिक मॉल में नहीं चलता। शिक्षा अब ज्ञान की साधना नहीं, बल्कि एक बाज़ार है, और इस बाज़ार का पहला नियम है- वही बेचो जिसकी डिमांड हो। आज डिमांड चरित्र की नहीं है; डिमांड रैंक की है, सरकारी सीट की है, करोड़ों के पैकेज की है। और जब डिमांड केवल परिणाम की हो, तो प्रक्रिया की पवित्रता अपने आप दम तोड़ देती है।

डिमांड और सप्लाई का खेल : जब माता-पिता ही खरीदार हों

एक बच्चा पैदा होते ही चरित्र का पाठ नहीं सीखता, वह अपने आस-पास के माहौल को देखता है। जब नीट जैसी परीक्षाओं के पेपर लीक होते हैं, तो लाखों-करोड़ों रुपये की डील होती है। यह पैसा किसी छात्र की जेब से नहीं आता; यह उसके अभिभावक देते हैं। जो माता-पिता अपने बच्चे के भविष्य के लिए ईमानदारी की जगह लीक हुआ पेपर खरीदना बेहतर समझते हैं, वे अनजाने में अपने बच्चे को पहला सबक यही सिखाते हैं कि "बेटा, चरित्र से पेट नहीं भरता, सफलता जैसे भी मिले, खरीद लो।" ऐसे में वह बच्चा बड़ा होकर डॉक्टर तो बन सकता है, लेकिन इंसान नहीं।

अभिभावक आज इस बाज़ार की व्यवस्था में पूरी भूमिका निभाते हुए 1000 प्रति विषय प्रायोगिक परीक्षा हेतु चुपचाप जमा कर देते हैं ताकि बच्चे के 50 में से 48-49 नंबर आ सकें। अभिभावक शिक्षण संस्थानों से यह कभी पूछते ही नहीं कि प्रयोगशालाओं में साल भर प्रयोग हुए भी हैं या नहीं!

गुरु जब डीलर बन जाए और व्यवस्था की रीढ़ टूटे :

शिक्षक को कभी राष्ट्र का निर्माता कहा जाता था। लेकिन जब पेपर तक पहुँच रखने वाले शिक्षक ही चंद रुपयों के लिए उसे लीक करने लगें, तो वे शिक्षक नहीं, शिक्षा के दलाल बन जाते हैं। जब गुरु ही चरित्र का सौदा करने लगे, तो शिष्यों से नैतिकता की उम्मीद करना बेईमानी है।

मज़ेदार बात यह है कि कुछ शिक्षक खुद 4 अलग-अलग लेखों की नकल करके एक नया लेख शोध पत्र लिखते हैं और उसी के दम पर उनका प्रमोशन हो जाता है। वहीं दूसरी तरफ, यदि कोई छात्र परीक्षा में नकल करता पकड़ा जाए, तो उसे 2 से 3 वर्ष के लिए परीक्षा से वंचित कर दिया जाता है। राष्ट्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों में नैक के एक्रेडिटेशन में अच्छा ठोड पाने के लिए जब शिक्षक, अधिकारी और प्रशासन खुद नकली डॉक्यूमेंट तैयार करके जमा करते हैं, तब वे विद्यार्थियों को चरित्रवान होने का पाठ कैसे पढ़ाएंगे? जब कुलगुरुओं / कुलपतियों की नियुक्ति का आधार आर्थिक , राजनीतिक या धार्मिक होगा तब वह छात्रों को चरित्र का क्या ज्ञान देंगे। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी जैसी सरकारी संस्थाओं का काम सिर्फ परीक्षा कराना नहीं, बल्कि देश के युवाओं में व्यवस्था के प्रति विश्वास पैदा करना था। लेकिन बार-बार होने वाले पेपर लीक और ढुलमुल रवैये ने यह साबित कर दिया है कि सिस्टम की रीढ़ टूट चुकी है। जब सरकारी तंत्र ही शुचिता को बनाए रखने में नाकाम या उदासीन हो, तो आम नागरिक का चरित्र पर से विश्वास उठना स्वाभाविक है।

लाजवाब सवाल : चरित्र आखिर है क्या? (एक वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण)

चरित्र वस्तुगत है या विषयगत ? क्या हर आदमी के लिए चरित्रवान की परिभाषा एक ही है? क्या यह पूरी तरह वैज्ञानिक है? या फिर व्यक्ति-व्यक्ति के लिए चरित्र की परिभाषा बदल जाती है? क्या अलग-अलग समाजों के लिए और समय-समय के साथ चरित्र की परिभाषा बदल जाती है? इन सवालों की गहराई को समझें तो सच यही है कि चरित्र कोई स्थिर या ठोस वस्तु नहीं है जिसे तराजू पर तोला जा सके। जो बात एक समाज में चरित्रहीनता मानी जा सकती है, वही दूसरे समाज में सामान्य व्यवहार हो सकती है। जो नियम सदियों पहले चरित्र का मापदंड थे, आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में वे प्रासंगिक नहीं रहे। यहाँ तक कि एक ही व्यवस्था में, एक गरीब के लिए भूख मिटाने के लिए की गई चोरी उसकी मजबूरी है, जबकि एक अमीर द्वारा करोड़ों का पेपर खरीदना उसका लालच है। दोनों के चरित्र को एक ही चश्मे से नहीं देखा जा सकता। जब चरित्र की परिभाषा ही इतनी लचीली, समय-सापेक्ष और समाज-सापेक्ष हो, तो इस गिरते हुए दौर में यह और भी उलझ जाती है। तो फिर चरित्रवान बनेगा कौन? और क्यों बने कोई?

जब परिभाषाएं इतनी जटिल हों और चारों तरफ गिरावट हो, तो सवाल फिर वही आता है: "जब कोई नहीं चाहता, तो मैं खुद चरित्रवान क्यों बनूँ?" इसका जवाब यह है कि चरित्र की ज़रूरत समाज के लिए बाद में है, खुद के वजूद के लिए पहले है।

खोखली सफलता का डर : जो डॉक्टर पेपर खरीदकर बनेगा, वह कभी आत्मविश्वास से किसी मरीज का इलाज नहीं कर पाएगा। उसके भीतर का डर और अयोग्यता उसे हमेशा कचोटती रहेगी। चरित्रवान इंसान को किसी बाहरी सर्टिफिकेट की ज़रूरत नहीं होती, उसका खुद का ज़मीर उसका सबसे बड़ा जज होता है। अगर हर कोई यह सोचकर बेईमान हो जाए कि बाकी सब भी तो कर रहे हैं, तो समाज समाज नहीं, एक खूंखार जंगल बन जाएगा।

खुद से आँखें मिलाने की हिम्मत: सफलता आज है, कल नहीं। पैसा आज है, कल जा सकता है। लेकिन जब आप रात को आईने में खुद को देखें, तो अपनी आँखों में आँखें डालकर कह सकें कि "मैंने जो भी हासिल किया, अपने दम पर किया, किसी का हक मारकर नहीं।" यही चरित्र की असली कमाई है, चाहे इसकी परिभाषा समय के साथ कितनी भी बदल जाए।

निष्कर्ष : बाज़ार बंद हो सकता है, आत्मा नहीं

यह बात शत-प्रतिशत सही है कि शिक्षा के इस बाज़ार में आज चरित्र की कोई डिमांड नहीं है। संस्थान रैंक बेच रहे हैं, चालाक लोग पेपर बेच रहे हैं, और अमीर लोग उसे खरीद रहे हैं।

लेकिन याद रखिए, बाज़ार वस्तुओं का होता है, इंसानी मूल्यों का नहीं। यदि व्यवस्था चरित्रवान नागरिक नहीं बनाना चाहती, तो यह ज़िम्मेदारी अब पूरी तरह व्यक्तिगत हो जाती है। चरित्रवान वह बनेगा, जिसके भीतर अभी भी थोड़ी सी गैरत बाकी है। जो भीड़ का हिस्सा बनकर सफल होने से बेहतर, अकेले खड़े होकर सच्चा रहना पसंद करता है। शायद आज ऐसे लोगों की संख्या मुट्ठी भर हो, और समय व समाज के हिसाब से उनकी परिभाषाएं अलग हों, लेकिन दुनिया इन्हीं मुट्ठी भर ईमानदार लोगों के भरोसे टिक सकती है, उन कागज़ी डॉक्टरों, शिक्षकों या अफ़सरों के भरोसे नहीं जो मर्यादाएं बेचकर कुर्सियों पर बैठे हैं।

प्रोफेसर अशोक कुमार
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में जल संचय - जन भागीदारी में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है राजस्थान

प्रदेश बना जल संरक्षण की जन-आंदोलन भूमि अभियान के पहले चरण में भी राज्य का देशभर में तीसरा स्थान रहा था

मोहनलाल जयपाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाने के अटूट संकल्प के अनुरूप देशभर में संचालित जल संचय-जन भागीदारी अभियान राजस्थान में व्यापक जनआंदोलन का रूप ले चुका है। जल शक्ति मंत्रालय के अंतर्गत संचालित यह अभियान 'कैच द रेन' पहल का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जन-सहभागिता, कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी तथा स्थानीय समुदायों के सहयोग से जल संरक्षण को बढ़ावा देना और भूजल स्तर में सुधार सुनिश्चित करना है।

प्रदेश में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दूरदर्शी नेतृत्व एवं प्रभावी मॉनीटरिंग के कारण जल संचय जन भागीदारी अभियान को अभूतपूर्व गति मिली है। मुख्यमंत्री की मंशानुसार जल संचय क्षमता बढ़ाने एवं भूजल पुनर्भरण हेतु विभिन्न प्रकार की जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण बड़े स्तर पर किया जा रहा है। जल संसाधन विभाग द्वारा अन्य विभागों के समन्वय से अभियान का प्रभावी संचालन किया जा रहा है, जिससे प्रदेश में जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। अभियान के तहत वर्षा जल के अधिकतम संरक्षण तथा भूजल स्तर में वृद्धि करने के लिए विभिन्न प्रकार की जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण एवं विकास किया जा रहा है, ताकि जल संकट के स्थायी समाधान की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

जल संचय जन भागीदारी-2.0 में राजस्थान की उल्लेखनीय प्रगति :- जल संचय जन भागीदारी-2.0 अभियान में राजस्थान निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है। 21 मई 2026 तक की प्रगति के अनुसार राजस्थान सम्पूर्ण देश में सातवें स्थान पर पहुंच चुका है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा समय-समय पर दिए गए दिशा-निर्देशों एवं सतत समीक्षा के परिणामस्वरूप अभियान को निरंतर गति मिल रही है। प्रदेश में अभियान के तहत शुरू किये गए कुल 2 लाख 67 हजार 837 कार्यों में से 2 लाख 33 हजार 854 कार्य पूर्ण किए जा चुके हैं, जबकि 33 हजार 983 कार्य प्रगति पर हैं। केन्द्र सरकार द्वारा 31 मई 2026 तक देशभर में एक करोड़ जल संचयन संरचनाओं के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मुख्यमंत्री शर्मा ने राज्य के समस्त विभागों एवं जिला प्रशासन को इस लक्ष्य की प्राप्ति में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

> ■ **इस वर्ष जल संचय जन भागीदारी- 2.0 के तहत 12 लाख 33 हजार 854 कार्य पूर्ण**

जल संचय जन भागीदारी-1.0 में राजस्थान ने बनाया रिकॉर्ड :- जल संचय जन भागीदारी-1.0 अभियान की अवधि 1 अप्रैल 2024 से 31 मई 2025 तक निर्धारित की गई थी। इस अभियान में राजस्थान ने देशभर में तृतीय स्थान प्राप्त कर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। राज्य के भीलवाड़ा एवं बाड़मेर जिले सम्पूर्ण भारत में क्रमश: द्वितीय एवं पंचम स्थान पर रहे, जो प्रदेश की उत्कृष्ट कार्यशैली का प्रमाण है।

31 मई 2025 तक कुल 4 लाख 16 हजार 83 कार्यों में से 3 लाख 64 हजार 968 कार्य पूर्ण किए गए, जबकि 51 हजार 115 कार्य प्रगतिरत थे। केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित 10 लाख जल संचय संरचनाओं के लक्ष्य के विरुद्ध राजस्थान द्वारा लगभग 27 लाख संरचनाओं का पोर्टल पर इन्द्राज किया जाना राज्य की सक्रियता एवं जनसहभागिता को दर्शाता है।

पोर्टल पर दर्ज की जा रही हैं विभिन्न जल पुनर्भरण संरचनाएं :- जल संचय जन भागीदारी- पोर्टल पर विभिन्न प्रकार की जल पुनर्भरण संरचनाओं का इन्द्राज किया जा रहा है। श्रेणी-1 में बोर-वेल रिचार्ज, बंद बोर-वेल तथा इंजेक्शन वेल शामिल हैं। वहीं श्रेणी-2 में रूफ-टॉप वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर, रिचार्ज शाफ्ट, रिचार्ज पिट, सोक पिट, ओपन वेल रिचार्ज, कंटूर ट्रेंच, गली प्लग, नाला बंड, गैबिअन, चेक डेम, सब सर्फेस डाइक, विलेज पॉण्ड, पर्कोलेशन पॉण्ड, टैंक, बेंच टैरेसिंग सहित कम लागत वाली नवाचार आधारित संरचनाएं सम्मिलित हैं। इन संरचनाओं के माध्यम से वर्षा जल को संरक्षित कर भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे ठामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जल उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

विभिन्न योजनाओं एवं निधियों से किए जा रहे कार्य :- जल संचय जन भागीदारी 2.0 अभियान के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं एवं निधियों के माध्यम से कार्य स्वीकृत किए जा रहे हैं। इनमें विकसित भारत-जी राम जी योजना, अमृत योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, कैम्पा, वित्त आयोग अनुदान, राज्य सरकार द्वारा पोषित योजनाएं, सीएसआर फण्ड, जिला मिनरल फण्ड, सामुदायिक फण्ड, एनजीओ एवं स्वयं सहायता समूह फण्ड, परोपकारी निधि, औद्योगिक दान, क्राउड फण्डिंग, व्यक्तिगत दानदाता, ठामीण अवसंरचना विकास कोष, सांसद एवं विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना तथा बीएडीपी सहित अन्य केंद्रीय योजनाएं शामिल हैं।

मुख्यमंत्री ने दिए जिलों के लक्ष्यों में 25 प्रतिशत वृद्धि के निर्देश :- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अभियान की प्रगति बढ़ाने के लिए समस्त विभागों एवं जिला कलक्टरों को स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान किए हैं। उन्होंने राजस्थान को सम्पूर्ण भारत में प्रथम स्थान दिलाने हेतु समन्वित प्रयास करने का आव्हान किया है। मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को जल संचय जन भागीदारी पोर्टल के डैशबोर्ड के माध्यम से दैनिक प्रगति की नियमित मॉनीटरिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने विशेष रूप से कम लागत वाली संरचनाओं जैसे रिचार्ज पिट, रिचार्ज शाफ्ट, सोक पिट, गली प्लग एवं परकोलेशन पॉण्ड के निर्माण को प्राथमिकता देने तथा रियल टाइम डेटा अपडेशन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही जिलों के लक्ष्यों में 25 प्रतिशत वृद्धि करने के निर्देश भी प्रदान किए गए हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में जल संरक्षण को लेकर जो जन-जागरूकता और प्रशासनिक सक्रियता देखने को मिल रही है, वह आने वाले समय में राजस्थान को जल संरक्षण एवं भूजल पुनर्भरण के क्षेत्र में देश का अठाणी राज्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगी। जल संचय जन भागीदारी अभियान केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जन-जन के सहयोग से जल संरक्षण का व्यापक जन आंदोलन बनता जा रहा है।

मोहन लाल जयपाल,
एपीआरओ, डीआईपीआर

राशिफल रविवार 31 मई, 2026

पंडित अनिल शर्मा

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, पूर्णीमा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2083, हस्त नक्षत्र प्रात: 5:57 तक, सिद्धि योग रात्रि 3:10 तक, वणिज करण सायं 5:46 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज कुमार और रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। भद्रा सायं 5:46 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:42 तक, लाभ-अमृत 10:42 से 2:05 तक, शुभ 3:46 से 5:28 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:09

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी में अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।